ISSN : 2347-7660 (Print) | ISSN : 2454-1818 (Online)

संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी की दशा और दिशा

प्रो0 वीरेन्द्र सिंह यादव,

प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ,उ.प्र.

शोध सारांश

भाषा अभिव्यक्ति का एक ऐसा माध्यम होती है, जिससे व्यक्ति अपने विचारों को दूसरे तक और दूसरे के विचारों को स्वयं तक जान एवं समझ सकता है। भाषा का प्रयोग लिखित और मौखिक दो रूपों में किया जाता है। लिखित रूप में भाषा प्रयोग करने वालों की तादाद निश्चय ही मौखिक या बोलचाल में प्रयोग करने वालों की अपेक्षा कम होती है। अंग्रेजी, चीनी, स्पेनिश, रसियन जैसी अनेक भाषाएँ हैं, जिनका प्रयोग किए जाने के मामले में दुनिया में दबदबा है। हिन्दी भी इन्हीं भाषाओं में से एक है, जिनका प्रयोग विस्तार रूप से दुनिया में हो रहा है। भाषा के प्रयोग के मामले में अगर देखा जाए तो कोई ऐसा निश्चित आँकड़ा नहीं है, जिससे यह कहा जा सके कि किस भाषा का दुनिया में कौन सा स्थान है।

बीज शब्द– *भाषा, अभिव्यक्ति का माध्यम, विश्व,भारत एवं संयुक्त राष्ट्र संघ।*

वर्तमान में पूरा विश्व भारत की ओर सम्मानजनक एवं आशावादी दृष्टि से देख रहा है। भारत वर्तमान काल में विश्व गुरू बनने की राह में निरंतर आगे बढ़ रहा है। भारतीय माननीय पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपयी, जो कि पहले ऐसे राजनेता थे, जो हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ तक ले गये और विश्व में भारत का परचम लहराया। फिर चाहे वो हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का अविस्मरणीय भाषण हो या हमारी पूर्व विदेशमंत्री स्वर्गीय श्रीमती सुषमा स्वराज का उत्कृष्ट संबोधन हो यह शोध पत्र इसी दिशा में भारत के बढ़ते वर्चस्व व हिंदी भाषा के प्रभाव का विश्लेषण करता है।

विदेशों में हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार के लिये सरकार की तरफ से भी विशेष प्रयास किये गये हैं। मॉरीशस, फीजी, त्रिनिदाद जैसे देशों के दूतावासों में हिन्दी प्रचार सभा की तरफ से हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिये हिन्दी अधिकारियों की नियुक्ति की गयी है। इस दिशा में विश्व हिन्दी सम्मेलन का योगदान भी उल्लेखनीय है। सन् 1975 ई0से लेकर विभिन्न देशों में आयोजित विश्व हिन्दी सम्मेलन हिन्दी भाषा और साहित्य के महत्व का प्रमाण है। सन् 1975 ई0 में नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन से विश्व हिन्दी सम्मेलनों की परम्परा शुरू हुई। इन सम्मेलनों के आयोजन ने हिन्दी साहित्य को एक वैश्विक स्वरूप और गति प्रदान किया। अभी तक ग्यारह विश्व हिन्दी सम्मेलनों का आयोजन हो चुका है।

'संयुक्त राष्ट्र संघ एक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन है। द्वितीय विश्वयुद्ध के विजेता देशों ने मिलकर संयुक्त राष्ट्र संघ को अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष में हस्तक्षेप करने के उद्देश्य से स्थापित किया था। जिसका मुख्य उद्देश्य विश्व में युद्ध रोकना, मानव अधिकारों की रक्षा करना, अन्तर्राष्ट्रीय कानून को निभाने की प्रक्रिया जुटाना, सामाजिक और आर्थिक विकास उभारना, जीवन स्तर सुधारना। इसके चार्टर पर 26 जून, सन् 1945

ई0 को सेन फ्रांसिस्को में हस्ताक्षर हुए जो 24 अक्टूबर सन् 1945 ई0 को लागू हुआ। संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रतीक चिन्ह में जैतून की दो शाखाएँ ऊपर की ओर खुली हैं और उनके बीच हल्की नीली पृष्ठभूमि में विश्व का मानचित्र है। संयुक्त राष्ट्र संघ के अधिकार पत्र पर 50 देशों के हस्ताक्षर होने के साथ ही इसकी स्थापना विश्व शाान्ति बनाये रखने के लिये की गई।

संयुक्त राष्ट्र संघ सामाजिक प्रगति, मानव अधिकर, अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा तथा विश्व शांति बनाये रखने के लिए कार्य करता है यह संस्थान 6 भाषाओं को ''राजभाषा'' के रूप में मानता है जिनमें से केवल दो भाषाएँ अंग्रेजी और फ्रांसिसी कार्यकारी भाषा मानी जाती है भारत अनिश्चित काल से हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकारिक भाषा बनाने का प्रयत्न कर रहा है इसका कारण यह है की हिंदी विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक बन चुकी है यह वर्तमान समय में अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में स्वयं को स्थापित कर चुकी है, भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र होने के साथ ही कई चुनिन्दा वैश्विक शक्तियों में अपनी पैठ जमा चूका है इसी के चलते सन् 2008 ई0 में मॉरिशस में विश्व हिंदी सचिवालय भी खोला गया है वर्तमान में ध्यान आकर्षित करने वाली बात यह है की संयुक्त राष्ट्र संघ अपने कार्यक्रमों का प्रसारण संयुक्त राष्ट्र रेडियो वेबसाइट द्वारा हिंदी भाषा में भी करता हैं।

हिंदी भाषा को विश्व पटल पर सबसे अधिक सम्मान तब मिला जब भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने भारत के सक्षम तथा ऊर्जा का संचार अपनी ज्ञानवाणी से संयुक्त राष्ट्र संघ के अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर किया, ऐसा करने वाले वे भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे, उनके वक्तव्य ने भारत को एवं हिंदी भाषा को एक नई पहचान दिलाई, उनका यह योगदान सदैव भारत को गर्वित करता रहेगा।

भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भी 61वीं संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपना वक्तव्य हिंदी में ही दिया था जिससे एक बार फिर भारत के 130 करोड़ देशवासियों का सर गर्व से ऊँचा हो गया था,वही सन् 2015 ई0 में भारत की तत्कालीन विदेश मंत्री स्वर्गीय श्रीमती सुषमा स्वराज ने भी दुनिया को यह बता दिया था कि हम भारतीय हैं और अपनी भाषा पर गर्व है। वर्तमान विश्व के सभी आर्थिक व सामारिक रूक से सशक्त देश भारत की ओर आशावान दृष्टि से देखते हैं क्यूँकि भारत एक उभरती हुई अर्थव्यवस्था बनने के साथ ही भारत एक युवा ऊर्जावान एवं हर स्थिति में अपना सामर्थ स्थापित करने में सक्षम है। इस महान देश के युवा होने के नाते हमारा यह कर्तव्य बनता है की हम भारत देश को और अपनी भाषा को विश्व विख्यात करे।

हिंदी भाषा भारत की अधिकरिक भाषा और संयुक्त अरब अमीरात मे मान्यता प्राप्त अल्पसंख्यक भाषा है विश्व में सन् 1990 ई0 की आर्थिक उदारवादी नीति के बाद विकसित हुए महानगरीय संस्कृति की मुख्यभाषा हिंदी बन गई संयुक्त राष्ट्र संघ के नियमों के अनुसार हिंदी की आधिकारिक भाषा बनाने के लिए संघ में दो–तिहाई बहुमत की आवश्यकता है। भारत की पूर्व विदेश मंत्री स्वर्गीय श्रीमती सुषमा स्वराज ने अपने अभूतपूर्व भाषण में हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ ने ले जाने के पीछे यह तर्क दिया था कि हिन्दी भारत की अधिकारिक भाषा होने के साथ–साथ फिजी की थी अधिकारिक भाषा है। साथ ही हिन्दी भाषा मॉरीशस, सुरीनाम, बिनिडाड और टोबागो जैसे कई और देशों में विस्तृत रूप से बोली जाती है।

यद्यपि चीन, फ्रांस, जापान और स्पेन जैसे देश अपनी भाषा पर अत्यंत गर्व करते हैं। वे औपचारिक रूप से इसी भाषा का प्रयोग करते हैं

तथा प्राथमि बोल–चाल में भी इसी भाषा का अयोग करते हैं। किन्तु हमारे देश में हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि अपनी मातृभाषा को देश की औपचारिक भाषा बनाने में ही काफी समय लग गया । हम बैद्धिक रूप से अभी भी ब्रिटिश शासन के अधीन ही काम कर रहे हैं। यही कारण है कि हम हिन्दी को उस स्तर पर नहीं पहुँच पाये जहाँ उसे होना चाहिए। यही कारण है कि अंतर्राष्ट्रीय ''शशि शरूर'' के भाषण से स्पष्ट है जो उन्होंने सुषमा स्वराज जी के संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी में बोले जाने वाले भाषण के पश्चात दिया था। उनका कहना था कि यदि हम हिंदी को संघ की औपचारिक भाषा बना देते हैं और हमारे प्रतिनिधि दक्षिण भारत से है तो हम उसे हिंदी बोलने के लिए विवश नही कर सकते हैं।

इन परिस्थियों से निपटने के लिए हमें हमारे देश की शैक्षणिक व्यवस्था में सुधार लाना होगा। इस समस्या के समाधान के लिए हमें विद्यार्थियों में हिन्दी के प्रति उत्साह बढ़ाना होगा जिसके लिए हमें हिंदी के महत्व को विद्यार्थियों को समझाना होगा। और हिन्दी के इतिहास को भी सामान्य पाठ्यक्रम में सम्मिलित करना होगा। हिन्दी भाषी प्रदेशों और विदेशी छात्रों में हिंदी का प्रचार–प्रसार बढ़ाने के लिए हम निम्नलिखित शैक्षणिक विधियों का प्रयोग कर सकते हैं–अभिव्यक्त भाषा शिक्षण, उदानर शिक्षण विधि, द्विभाषीय शिक्षण विधि।हिन्दी सीखने वाले छात्र–छात्राओं को छात्रवृत्ति देकर भी उनको प्रोत्साहित किया जा सकता है। हिंदी हमारी राष्ट्र धरोहर है एवं हमारी पहचान जिसके संरक्षण हेतु हमे साथ में आना होगा और उसके विकास की ओर कदम उठाना होगा।

वैश्वीकरण का अर्थ अन्तर्राष्ट्रीय एकीकरण है। इस एकीकरण में भाषा की भूमिका अहम होगी और जो भाषा व्यापक रूप से प्रयोग में रहेगी उसी का स्थान विश्व में सुनिश्चित होगा। वैश्वीकरण के बाद भाषाओं को भी दो भागों में बाँटा जा सकता है। विश्व स्तर पर छः भाषाओं को सरकारी कामकाज के लिये अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं का स्थान दिया गया है। ये भाषायें हैं– अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश, चीनी, रूसी और अरबी। और दूसरी ये भाषायें जो व्यापार में सम्पर्क भाषाओं ग्लोबल लैग्विजेश के रूप में प्रयोग में आती हैं। आठवें विश्व हिन्दी सम्मेलन में यह जोरदारी से माँग उठायी गयी है कि हिन्दी को भी संयुक्त राष्ट्रसंघ की 7वीं अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में मान्यता प्रदान किया जाये। यदि हिन्दी को वैश्विक दर्जा दिलानें का कोई कारक है तो वह व्यवसाय और व्यापार है।

आज विश्व के हर देश एक दूसरे पर अधिकार जमाने क`लिए खड़े रहते हैं कई देशों में आन्तरिक कलह इतना अधिक हो चुका है कि वहाँ मानवीय मूल्यों की आहूति दी जा रही है। कई देशों में तानाशाहों का आतंक है तो आतंकवादी आए दिन लोगों की जिंदगी से खेल रहे हैं। इन सबको नियन्त्रण में करने के लिए हर देश अपने स्तर पर तो काम करते हैं साथ ही इन सबके ऊपर नजर रहती है दुनिया के सबसे बड़ी संघ की। संयुक्त राष्ट्र संघ के नाम से मशहूर यह अन्तर्राष्ट्रीय संस्थान जाति, धर्म, भाषा और देश से ऊपर उठकर पूरे संसार के कल्याण के लिए काम करता है। संयुक्त राष्ट्र संघ से पूर्व पहले विश्व युद्ध के बाद राष्ट्र संघ की स्थापना की गई थी। इसका उद्देश्य किसी संभावित दूसरे विश्व युद्ध को रोकना था, लेकिन राष्ट्र संघ सन्1930 ई0 के दशक में दुनिया के युद्ध की तरफ बढ़ावा को रोकने में विफल रहा और सन्1946 ई0 में इसे भंग कर दिया गया। राष्ट्र संघ के ढाँचे और उद्देश्यों को संयुक्त राष्ट्र संघ ने अपनाया। संयुक्त राष्ट्र संघ में 193 सदस्य हैं। राष्ट्रों के स्वतंत्र होने के साथ ही पूर्व सोवियत संघ के विघटन के बाद इसके सदस्यों की संख्या में लगातार बढ़ोत्तरी हुई। संयुक्त राष्ट्र संघ को चलाने के लिए सदस्य देश योगदान करते हैं।

किसी देश की क्षमता के आधार पर योगदान तय किया जाता है। संयुक्त राष्ट्र संघ में अमरीका का योगदान सबसे अधिक है। संयुक्त राष्ट्र की कई स्वतंत्र संस्थाएँ भी हैं जो हर मुद्दे को अलग–अलग स्तर पर सुलझाती हैं – जैसे खाद्य एवं कृषि संगठन अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संघ, विश्व बैंक, यूनेस्को, विश्व स्वास्थ्य संगठन आदि राष्ट्र संघ काफी हद तक प्रभावहीन था और संयुक्त राष्ट्र का उसकी जगह होने का यह बहुत बड़ा फायदा है कि संयुक्त राष्ट्र अपने सदस्य देशों की सेनाओं को शान्ति के लिए तैनात कर सकता है। विभिन्न देशों में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा शान्ति सेना को गृहयुद्ध रोकने के लिये व सुरक्षा स्थापित करने के लिये भेजी जाती है, जिसमें भारतीय सेनाओं का भी अभिन्न योगदान रहता है।

संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी संस्थाओं के अभाव में विश्व की कल्पना नहीं की जा सकती। चाहे विश्व का कोई कितना भी समृद्ध देश क्यों नहीं हो, उसे संयुक्त राष्ट्र संघ के आदेशों का पालन करना ही हैं भारत सदा से ही शान्ति के मार्ग पर चलने वाला देश रहा है। अपनी समस्याओं के निराकरण के लिए भारत ने शान्ति का रास्ता अपनाया है। अतः भारत की संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी संस्थाओं में पूर्ण आस्था है। भारत विश्वशान्ति की स्थापना में सदा योगदान करता आया है भारत संयुक्त राष्ट्र संघ का आरम्भ से ही सदस्य रहा है तथा उसके कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेता है। संयुक्त राष्ट्र संघ को अधिक शक्तिशाली या सुदृढ़ बनाने के लिये भारत सदैव प्रयत्नशील रहा है। इस सम्बन्ध में भारत ने अनेक कदम उठाए हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ ने शान्तिरक्षक अभियानों में भारत के बहुमूल्य योगदान के लिए उसकी सराहना की है।

विशेष अनुसंधान द्वारा भारत की राष्ट्र भाषा हिन्दी व उसकी लिपि भाषा संस्कृत एक वैज्ञानिक भाषा के रूप में उभर कर सामने आई इसीलिए यू0एन0ओ0 ने हिन्दी में एक नयी न्यूज वेबसाइट लांच की है। इसके साथ ही हिन्दी एशिया की पहली ऐसी भाषा रूप में स्थापित हो गयी है जिसे यू0एन0ओ0 की अधिकारिक भाषा होने के बावजूद यह सम्मान हासिल हुआ है। संयुक्त राष्ट्र पहले से ही सोशल मीडिया पर हिन्दी का इस्तेमाल कर रहा है। पिछले साल हिन्दी न्यूज बुलेटिन की शुरुआत की थी। भारत सरकार भी हिन्दी को यू0एन0ओ0 की अधिकृत भाषा बनाने की कोशिश में है। संयुक्त राष्ट्र के इस कदम से लग रहा है कि हिन्दी जल्द ही जल्द यू0एन0ओ0 की सांतवीं अधिकृत भाषा बनेगी। यू0एन0ओ0 हिन्दी में रेडियो बुलेटिन का प्रसारण भी कर रहा है।

विश्व में हिन्दी भाषा 120 करोड़ लोग बोलते तथा जानते हैं। भारत में इनकी संख्या 100 करोड़ है तथा अन्य देशों में हिन्दी बोलने तथा जानने वाले 20 करोड़ लोग हैं। हिन्दी विश्व में दूसरे नम्बर की भाषा है। इस नाते यू0एन0ओ0 को इसे अपनी अधिकारिक भाषा घोषित करके इस आत्मीयतापूर्ण भाषा को विश्व के सबसे बड़े व युवा लोकतान्त्रिक राष्ट्र भारत का सम्मान देना चाहिए। सन् 1945 ई0 में यू0एन0ओ0 की अधिकारिक भाषायें चार थीं। अंग्रेजी, रूसी, फ्रांसीसी, चीनी। बाद में इसमें अरबी और स्पेनिश शामिल कर ली गयी। इन 6 भाषाओं में से केवल अंग्रेजी भाषा ने ही विश्व स्तर पर पहचान बनायी है। शेष पाँच भाषायें अपने–अपने देश में सिमट कर रह गयी हैं फिर भी वह यू0एन0ओ0 की अधिकारिक भाषा है।

नोबल शान्ति पुरस्कार से सम्मानित नेल्सन मण्डेला के अनुसार शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिससे दुनिया को बदला जा सकता है। हिन्दी के महान कवि श्री अटल बिहारी बाजपेयी देश के पूर्व प्रधानमंत्री श्री मोरार जी देसाई की सरकार से विदेश मंत्री रहे थे। इसी दौरान वर्ष 1977 से यू0एन0ओ0 के अधिवेशन में उन्होंने विश्वव्यापी व विश्व बंधुत्व के

दृष्टिकोण से ओत–प्रोत ओजस्वी भाषण हिन्दी में दिया था। अटल जी पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने यू0एन0ओ0 में भाषण देकर भारत तथा हिन्दी को वैश्विक स्तर पर गौरवान्वित किया था। हिन्दी को विश्वव्यापी पहचान दिलाने के लिये 10 जनवरी को अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

राष्ट्रपति मैथिलीशरण गुप्त ने कहा था, जो भरा नहीं है भावों से जिसमें बहती रसधार नहीं, वह हृदय नहीं है, पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं। हिन्दी के महान कवि व भारतीय पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी अपने देश की हिन्दी भाषा अपने देश की वसुधैव कुटुम्बकम की महान संस्कृति में मानव जाति की भलाई को देखते थे। उनकी कविता विश्व शान्ति के हम साधक है। जंग न होने देंगे सम्पूर्ण विश्व को युद्ध रहित बनाने के लिये संकल्पित होने के लिये प्रेरित करती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि संयुक्त राष्ट्र संघ के मंच हिन्दी जगत ने हमेशा परचम फहराया और विश्व में अपनी जगह बनाकर एक दिन संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकारिक भाषा का दर्जा प्राप्त करेगी।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने 22 जुलाई को साप्ताहिक आधार पर हिंदी समाचार बुलेटिन का प्रसारण व बाद के वर्ष मे 11 जुलाई से हिंदी में ट्वीट करना भी प्रारंभ किया। पहला शब्द जिसे ट्वीट किया गया वह था 'नमस्कार'। वर्धा में विश्व हिंदी विश्वविद्यालय खोला गया। अमेरिका में एम0बी0ए0 में हिंदी माध्यम से पढ़ाई शुरू की गई। डॉ0 जयंती प्रसाद नौटियाल की शोध रिपोर्ट 'ग्रंथ श्रृंखला' के अनुसार अभी तक यह माना जाता रहा है कि वैश्विक स्तर पर मंदारिन भाषा सबसे ज्यादा बोली जाती है, यह भ्रामक आंकड़ा है। उदयपुर के सुखाड़िया विश्वविद्यालय में अपना उद्बोधन देते हुए उन्होंने कहा कि अब हिंदी मंदारिन को पीछे छोड़ते हुए विश्व में नंबर एक पर बोली जाने वाली भाषा बन गई है।चीन की जनसंख्या 1360 मिलियन है एवं वहां की 70 फीसदी आबादी ही मंदारिन बोलती है व दूसरे देशों में लगभग 100 मिलियन लोग मंदारिन बोलते हैं। सन् 2015 ई0 में हिंदी बोलने वालों की संख्या 1300 मिलियन हो गई थी जो मंदारिन से 200 मिलियन अधिक थी। विश्व में हिंदी भाषियों की संख्या 1,29,86,17,995 है। विश्व जनसंख्या में कुल 18.5 फीसदी लोग हिंदी जानते हैं। भारत में 1023 मिलियन, पाकिस्तान में 165 मिलियन, बांग्लादेश में 59 मिलियन, नेपाल में 25 मिलियन लोग हिंदी जानते हैं। हिंदी जानने व बोलने वालों की संख्या में तेजी से वृद्धि भी दिखाई दे रही है। मुंबई विश्वविद्यालय के हिंदी के प्रो0 करुणा शंकर उपाध्याय व बैंक आफ बडौदा राजभाषा के उपमहाप्रबंधक डॉ0 जवाहर कर्णावट के अनुसार लगभग 200 वर्ष पूर्व गिरमिटिया देश जैसे फिजी, सूरीनाम, त्रिनिडाड, मारीशस आदि देशों में भारतीयों के ले जाए जाने के बाद आज इन देशों मे हिंदी एक महत्वपूर्ण भाषा हो गई है। फिजी में आज आठवीं तक हिंदी को अनिवार्य कर दिया गया है। सन् 1935 ई0 से शांतिदूत नामक हिंदी समाचार पत्र लगातार प्रकाशित हो रहा है।अमेरिका में भी 'हिंदी जगत' व 'ज्ञान प्रकाश' जैसी पत्रिकाए व इंग्लैंड से 'पुरवाई' नामक पत्रिका प्रकाशित हो रही हैं। भारत की लोकसंस्कृति के पक्ष में भी विदेशों में लगातार काम हो रहे हैं। पोलैंड में रामायण पर बहुत काम हुआ है, रूस में भी हिंदी में शोध कार्य हुए हैं। 150 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। इन विश्वविद्यालयों में दक्षिण एशिया के अंतर्गत भारत का अध्ययन किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त भारत के विषय में अलग से भी अध्ययन को शामिल किया गया है। भारत सरकार ने दूसरे देशों में सांस्कृतिक विद्यापीठ भी स्थापित किये हैं। गौरतलब है कि केंद्रीय मंत्री और पूर्व में सेना प्रमुख रह चुके श्री वी0 के0 सिंह ने पिछले वर्ष राज्यसभा में बताया था कि वित्तीय वर्ष 2017–18 में भारत के राजनयिक मिशनो और

विदेशों में हिंदी के प्रचार के प्रयासों के लिए 5 करोड़ रुपए आवंटित किए गए थे। अकेले अमेरिका में 67 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। चीन में सन् 2020 ई0 तक 50 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाने की उम्मीद है। पूरे विश्व में लगभग 28000 ऐसी संस्थाएं हैं जहाँ हिंदी पढ़ाई जा रही है। सऊदी अरब के रियाद मे सीबीएसई बोर्ड का हिंदी का विश्वविद्यालय है जिसमें हिंदी पढ़ने वाले 42000 छात्र हैं। खाड़ी देशों में हिंदी संपर्क भाषा के रूप में बहुत तेजी से उभरी है। हिंदी भाषा में इंग्लैंड से प्रसारित होने वाले बीबीसी रेडियो के अतिरिक्त सनराइज रेडियो ने भी हिंदी को मजबूत किया है। फिजी व मारीशस में 24 घंटे प्रसारण का अपना हिंदी रेडियो है। हिंदी समाचार पत्रों के अतिरिक्त वर्तमान में हिंदी की ई बुक व ई मैग्जीन ने हिंदी के प्रसार में तेजी से भूमिका निभाई है। पहले लोग पुस्तकों को प्रकाशक व पुस्तकालय में ढूँढने जाते थे, अब आसानी से इंटरनेट के सहारे पढ़ लेते हैं। भारत से निकलने वाले समाचार आसानी से ई–समाचार पत्र के माध्यम से विदेशों में पढ़े जा रहे हैं। इंटरनेट की दुनिया ने वैश्विक स्तर पर हिंदी को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है माना जा रहा है की इंटरनेट में 95 प्रतिशत हिंदी की सामग्री का विस्तार हुआ है जोकि अंग्रेजी के सामग्री से कई गुना अधिक है। यूनिकोड ने हिंदी टाइपिंग व हिंदी सामग्री को बढ़ाने में बहुत सहयोग दिया है। मनोरंजन के क्षेत्र मे इंटरनेट के बढ़ते प्रभाव ने हिंदी की तरफ रुझान बढ़ाया है। हिंदी के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेई जी के उक्त पंक्तियां सहज ही स्मृति मे आ जाती हैं–

गूंजी हिंदी विश्व में, स्वप्न हुआ साकार।
संयुक्त राष्ट्र के मंच से, हिंदी का जयकार।
हिंदी का जयकार, हिंद हिंदी में बोला।
देख स्वभाषा प्रेम, विश्व अचरज से डोला।

वैश्विक फलक पर हिंदी की बढ़ती चमक धमक के बावजूद संयुक्त राष्ट्र संघ के आधिकारिक भाषा के रूप में हिंदी को मान्यता न मिल पाना खेद जनक है। मान्यता प्राप्त करने के लिए 193 सदस्य देशों के मध्य योग दिवस की तरह एक प्रस्ताव लाना होगा। जिस पर यदि 129 देशों की सहमति बन जाती है, तो संयुक्त राष्ट्र संघ के विधान की धारा 51 के अंतर्गत संशोधन होगा। हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दिए जाने पर आने वाले व्यय का वहन संबंधित देश को करना होगा। गौरतलब है कि मारीशस जैसे देशों ने स्वयं भी यह प्रस्ताव रखा था। भारत के लिए इस तरह के व्यय का वहन करना कोई बहुत मुश्किल भरा काम नहीं है। बस जरूरत है वैश्विक स्तर पर रणनीति के तहत कार्य किया जाए। हिन्दी के वैश्विक स्तर पर बढ़ते महत्व को देखते हुए यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि हिंदी को इतनी तेजी से मान्यता क्यों मिल रही है? इसका उत्तर आर्थिक क्षेत्र मे, विश्व का बाजार में परिवर्तित हो जाने के रूप मे दिखाई देता है। विभिन्न मल्टीनेशनल कंपनियां भारत के बाजार में अपना भविष्य तलाशने का प्रयास करती रहती हैं। विकसित देशों में स्थिर हो चुकी अर्थव्यवस्था भारत जैसे देशों के ग्राहकों के माध्यम से मुनाफे के लिए प्रयासरत रहती हैं। मुनाफे का यह प्रयास उन्हें भारत में हस्तक्षेप करने के लिए प्रेरित करता है अतः भारत के ग्राहकों को लुभाने के लिए उनकी लोक संस्कृति, भावनाओं, अभिलाषाओं को जानने के लिए हिंदी को समझना जरूरी है। यही कारण है कि हिंदी के प्रचार प्रसार में जितना योगदान कारपोरेट का है, विभिन्न सरकारों का भी है।

संदर्भ सूची

1. दुबे मालती– वैश्विक परिपेक्ष्य में हिन्दी, पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद,प्राक्कथन, 1992,1999

2. मलिक मोहम्मद, राष्ट्रभाषा विकास के विविध आयाम, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002
3. भट्ट मोहनलाल, (प्रकाशक), रजत जयंती ग्रंथ, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा, 1962
4. द्विवेदी महावीर प्रसाद, हिन्दी भाषा, वाणी प्राकशन, नई दिल्ली, 2003
5. पी.आर. निवास शास्त्री, कर्नाटक में हिन्दी प्रचार की गतिविधियाँ, कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, बैंगलोर, 1998
6. एन. वेंकटेश्वर, संपादक, दक्षिण में हिन्दी प्रचार आन्दोलन का इतिहास, ऑफसेट डिविजन, 1994
7. शर्मा रामविलास– भाषा और समाज– राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि. 1 बी नेता जी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–110002, तीसरा संस्करण–1989
8. शर्मा रामविलास–ऐतिहासिक भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा–राजकमल प्रा.लि. 1 बी नेता जी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–110002, प्र. सं.–2001
9. सांकृत्यायन राहुल–राष्ट्रभाषा हिन्दी–राधाकृष्ण प्रकाशन, जी–17, जगतपुरी दिल्ली–110051, प्र. संस्करण–2002, आवृत्ति–2004
10. द्विवेदी महावीर प्रसाद–हिन्दी भाषा –वाणी प्रकाशन–21 ए दरियागंज, नई दिल्ली 110002, संस्करण–1995
11. गोपी कृष्ण राठी, मधुकर, गोवर्धन शर्मा–राष्ट्रभाषा हिन्दी–रूपा बुक्स प्रा.लि. एस–12 शापिंक काम्पलेक्स तिलक नगर जयपुर–302004, प्र.सं.–1995
12. मृगेश मणिक, राजभाषा की प्रवृतियाँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
13. मुले, गुणाकर शर्मा, सुभाष, मिश्र, देवेन्द्र (सं.), हिन्दी भाषाः विविध आयाम, साहित्य संसद, नई दिल्ली, 2006
14. Mangalam Kumar, S. Mohan, India’s Languages Crisis An introductory study. New Century, Book House, Madras, 1965